विशद
लघु तत्त्वार्थसूत्र
मण्डल विधान

माण्डला

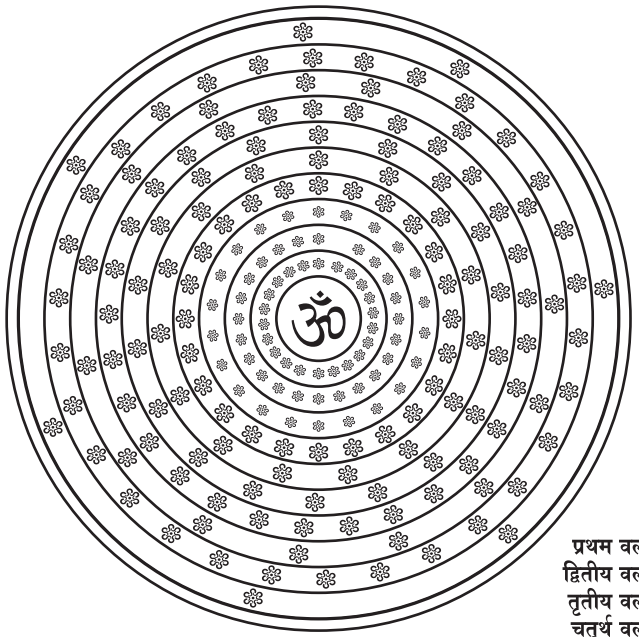

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 22 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 23 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 22 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 24 अर्घ्य
पंचम वलय में – 15 अर्घ्य
षष्ठम वलय में – 18 अर्घ्य
सप्तम वलय में – 29 अर्घ्य
अष्टम वलय में – 15 अर्घ्य
नवम वलय में – 30 अर्घ्य
दशम वलय में – 7 अर्घ्य
कुल 205 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

Ñfr % fo'knrÙokFkZlw=ke.Myfoèkku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ vkpk;Z Jh 108 fo'kn lkxj th egkjkt

laLdj.k % izFke&2014 * izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kky lkxj th egkjkt

lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 fo lkse lkxj th egkjkt

laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ cz- vkLFkk nhnh] cz- liuk nhnh

la;kstu % cz- lksuw nhnh] cz- fdj.k nhnh] cz- vkjrh nhnh] cz- mek nhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIr LFkku % 1- tSu ljksoj lfefr] fueZyddqekj xksèkk] 2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu%0141&2319907 ¼?kj½ eks- %9414812008

2- Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- %9414016566

3- fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j ykycÙkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971

ewY; % 25@&#- ek=k

−: अर्थ सौजन्य :−

श्री बिशन चन्द जैन

जितेन्द्र इलैक्ट्रोनिक एण्ड फर्नीचर हाऊस

नलापुर, नारनौल (हरियाणा)

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com

rÙokFkZlw=ozr fof/k

तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ जिसका दूसरा नाम मोक्षशास्त्र भी है, इसमें दश अध्याय हैं। दिगम्बर जैन परम्परा में संस्कृत भाषा में पहला सूत्रग्रंथ है। एक-एक अध्याय को आश्रित करके इसके 10 व्रत किये जाते हैं। व्रत में भगवान का अभिषेक करके। सरस्वती प्रतिमा या श्रुतस्कंध यंत्र का भी अभिषेक करके तत्त्वार्थ सूत्र की पूजा करें।

समुच्चय मंत्र–ॐ ह्रीं दशाध्यायसहिततत्त्वार्थसूत्रमहाशास्त्रेभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रप्रथमाध्यायस्य सम्यग्दर्शनादित्रयस्त्रिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
2. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रद्वितीयाध्यायस्य औपशमिकादित्रिपंचाशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
3. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रतृतीयाध्यायस्य रत्नशर्करादि-एकोनचत्वारिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
4. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रचतुर्थाध्यायस्य देवाश्चतुर्णिकाया आदि द्विचत्वारिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
5. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रपंचमाध्यायस्य अजीवकायादि द्विचत्वारिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
6. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रषष्ठाध्यायस्य कायवाङ्मनः कर्मयोगइत्यादि सप्तविंशतिसूत्रेभ्यो नमः।**
7. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रसप्तमाध्यायस्य हिंसानृतस्तेयादि एकोनचत्वारिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
8. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्राष्टमाध्यायस्य मिथ्यादर्शनाविरत्यादि-षड्विंशतिसूत्रेभ्यो नमः।**
9. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रनवमाध्यायस्य आस्रवनिरोधःसंवर आदिसप्तचत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो नमः।**
10. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रदशमाध्यायस्य मोहक्षयाज्ज्ञानादि नवसूत्रेभ्यो नमः।**

इस व्रत को पूर्ण कर उद्यापन में **परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशदसागर जी** द्वारा रचित यह **'तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान'** करके तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ या विधान छपाकर ज्ञानदान में चतुर्विध संघ को प्रदान करें। दश-दश उपकरणादि मंदिर जी में भेंट देवें। यथाशक्ति व्रत पूर्ण करें। दशलक्षण पर्व में यह विधान अवश्य करें यह विधान आपके जीवन में कर्म निर्जरा का कारण बने। इसी भावना के साथ पुनश्च गुरुदेव श्री विशदसागर जी महाराज के चरणों में नमोस्तु-3

-मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक .... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांती सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से पावें निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है। पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।

आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिन आगम जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैरागय जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याय भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– नेता मुक्ति मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

॥श्री वीतरागाय नमः॥

श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान पूजा

स्थापना

मोक्ष मार्ग के नेता हैं जो, कर्म शिखर के हैं भेदक।
सर्व तत्त्व के ज्ञाता पावन, दिव्य देशना उपदेशक॥
उन समान गुण पाने को हम, करते चरणों में अर्चन।
निज उर के सिंहासन पर जिन, मुनि का करते आह्वानन्॥
दोहा– जैनागम का शास्त्र है, मोक्ष शास्त्र है नाम।
पाने सम्यक् ज्ञान शुभ, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्र मोक्ष शास्त्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्र मोक्ष शास्त्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापननम्।
ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्र मोक्ष शास्त्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द मोतियादाम)

यह चरण चढ़ाने लिया नीर, अब रोग त्रय की मिटे पीर।
हम पूज रहे तव चरण नाथ!, दो मोक्ष मार्ग में हमे साथ॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥1॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय दिव्य जलं निर्वपामीति स्वाहा।

फैले चन्दन की बहु सुवास, हो भवाताप का पूर्ण नाश।
बनकर आये प्रभु ज्ञानवान, जो भवाताप की किए हान॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥2॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय भवाताप विनाशनाय दिव्य चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ले पूजा करें आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।
हम पूजा करने खड़े द्वार, भव सिन्धू से अब करो पार॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥3॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय अक्षय पद प्राप्ताय दिव्य अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पूजा करने लिए फूल, अब काम रोग का नशे मूल।
हम बनें नाथ अब शीलवान, शुभ प्राप्त करें निज गुण प्रधान॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥4॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय कामबाण विध्वंसनाय दिव्य पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह चरू चढ़ाते हैं महान, अब क्षुधा रोग की होय हान।
यह भक्त खड़े हैं लिए आस, प्रभु मोक्ष महल में होय वास॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥5॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय क्षुधारोग विनाशनाय दिव्य नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम करें दीप से जग प्रकाश, अब मोह महातम होय नाश।
प्रगटाएँ हम केवल्य ज्ञान, जो तीन लोक में है प्रधान॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥6॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दिव्य दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ खेने लाए यहाँ धूप, नश कर्म प्राप्त हो निज स्वरूप।
अब अष्ट कर्म का हो विनाश, सम्यक्त्व ज्ञान का हो प्रकाश॥
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज॥7॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय अष्ट कर्म दहनाय दिव्य धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से हम पूजा करें देव, अब मोक्ष महाफल मिले एव।
अब मुक्ती पथ की मिले राह, मिट जाए मन की चाह दाह।।
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज।।8।।

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय मोक्षफल प्राप्ताय दिव्य फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अब चढ़ा रहे ये श्रेष्ठ अर्घ्य, पद भी हम पाएँ शुभ अनर्घ्य।
अब शाश्वत पद में हो निवास, हो जाए नाथ अब पूर्ण आस।।
जो मोक्ष मार्ग करता प्रकाश, मिथ्यात्व मोह का करे नाश।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभ ग्रन्थराज, भव सिन्धू से तारण जहाज।।9।।

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित तत्त्वार्थ सूत्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम अध्याय

दोहा– मोक्ष शास्त्र जग में रहा, महिमामयी महान।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, करने को गुणगान।।

।।इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– सद्दर्शन ज्ञानाचरण, मोक्ष मार्ग पहिचान।
तत्त्व अर्थ श्रद्धान शुभ, सम्यक् दर्श महान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मोक्ष मार्ग सम्यक् दर्शन प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन जीव को, होय स्वपर उपदेश।
हो निसर्ग स्वभाव से, अधिगम पर उपदेश।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् दर्शन भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीवाजीव आश्रव तथा, बन्ध अरु संवर जान।
कर्म निर्जरा मोक्ष यह, सप्त तत्त्व पहिचान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री जीवादि तत्त्व प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नाम स्थापना द्रव्य अरु, भाव न्यास ये चार।
इनके द्वारा जगत में, चले लोक व्यवहार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नामादि भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान प्रमाण है, एक देश नय जान।
वस्तु तत्त्व का लोक में, होता जिनसे ज्ञान।।5।।

ॐ ह्रीं श्री प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्देश स्वामित्व हेतु अरु, अधिकरण स्थिति विधान।
जिनके द्वारा लोक में, हो तत्त्वों का ज्ञान।।6

ॐ ह्रीं श्री निर्देशादि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत् संख्या शुभ क्षेत्र अरु, कालान्तर स्पर्श।
अल्पबहुत्व से जीव को, हो भावों का दर्श।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सत्संख्यादि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति श्रुत दोय परोक्ष हैं, तीन ज्ञान प्रत्यक्ष।
अवधि मनः पर्यय तथा, केवल है प्रत्यक्ष।।8।।

ॐ ह्रीं श्री प्रत्यक्ष परोक्ष ज्ञान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मति स्मृति संज्ञा तथा, चिंता अरु अभिनिबोध।
अर्थान्तर मति ज्ञान के, जिनसे हो प्रतिबोध।।9

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञान पर्यायवाची नाम प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चेन्द्रिय मन से सहित, होता है मतिज्ञान।
अवग्रह ईहा अवाय अरु, धारणा भेद महान।।10।।

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञान भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बहु बहुविध ध्रुव अनि:श्रित, अक्षिप्र और अनुक्त।
छह इनके विपरीत हैं, ज्ञान के कारण उक्त॥11॥

ॐ ह्रीं श्री बहु-आदि भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बहु आदिक के भेद सब, अर्थ द्रव्य में होय।
व्यंजन का रस आदि में, मात्र अवग्रह होय॥12॥

ॐ ह्रीं श्री अर्थव्यंजन भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अव्यक्त व्यंजन का सदा, मात्र अवग्रह होय।
ना हो मन अरु नेत्र से, बहु आदिक में होय॥13॥

ॐ ह्रीं श्री व्यंजनावग्रह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान के भेद दो, बारह और अनेक।
मति ज्ञान द्वारा जगे, जीव का स्वयं विवेक॥14॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव प्रत्यय अवधिज्ञान तो, देव नारकी पाय।
छह प्रकार का क्षयोपशम, नर पशु ही प्रगटाए॥15॥

ॐ ह्रीं श्री क्षयोपशम तथा अवधिज्ञान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन: पर्यय के भेद दो, ऋजु विपुलमति ज्ञान।
हो विशुद्धि प्रतिपात ना, विपुल मती में मान॥16॥

ॐ ह्रीं श्री मन:पर्यय भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षेत्र विशुद्धि स्वामी विषय, यह विशेषता जान।
अवधि मन:पर्यय सदा, दोनों भिन्न महान॥17॥

ॐ ह्रीं श्री अवधिमन:पर्यय अन्तर प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति श्रुत दोनों द्रव्य की, जानें कुछ पर्याय।
पर्याय रूपी जानता, अवधि ज्ञान कहलाय॥18॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतावधि विषय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सर्वावधि का अनन्तवाँ, जाने मन:पर्याय।
सर्वद्रव्य पर्याय को, केवल ज्ञान बताय॥19॥

ॐ ह्रीं श्री अवधिमन:-पर्यय केवल ज्ञान विषय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होवे क्रमश: चार तक, या हो केवल ज्ञान।
तीन ज्ञान विपरीत हैं, प्रथम कहे पहिचान॥20॥

ॐ ह्रीं श्री मत्यादिज्ञान संभव तथा कुज्ञान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदसद के सद ज्ञान बिन, जो इच्छा में आय।
उन्मत जैसी चेष्टा, मिथ्या ज्ञान कहाय॥21॥

ॐ ह्रीं श्री कुज्ञान स्वभाव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नैगम संग्रह व्यवहार अरु, ऋजु सूत्र समभिरूढ़।
शब्द अरु एवंभूत नय, जान सकें ना मूढ़॥22॥

ॐ ह्रीं श्री नैगमादिनय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

सम्यक् दर्शन ज्ञान का, किया गया व्याख्यान।
यहाँ प्रथम अध्याय में, उमास्वामि ने मान॥
ज्ञान सुधारस का 'विशद', करने को रसपान।
पूजा करते भाव से, करने सद् श्रद्धान॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित प्रथम-अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय अध्याय

(चौपाई)

उपशम क्षायिक मिश्र प्रधान, जीवों के हैं भाव महान।
औदायिक पारिणामिक जान, भाव जीव के हैं यह मान॥1॥

ॐ ह्रीं श्री औपशमिक आदि भाव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वय नव अष्टादश इकबीस, तीन भेद बतलाए ऋशीष।
उपशम सम्यक् चारित जान, उपशम के दो भेद महान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री औपशमिक भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षायिक दर्शन चारित ज्ञान, हान लाभ उपभोग प्रधान।
भोग वीर्य युत नौ यह भेद, प्राणी का हरते हैं खेद।।3।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिक भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लब्धि ज्ञान दर्शन अज्ञान, पंच चार त्रय त्रय पहिचान।
संयमासंयम सम्यक् जान, चारित मिश्र के भेद महान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मिश्र भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गति कषाय लिंग त्रय जान, असंयमासिद्ध दर्श अज्ञान।
चार चार त्रय इक चऊ बार, लेश्या के छह कहे प्रकार।।5।।

ॐ ह्रीं श्री औदायिक भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भव्याभव्य जीवत्व प्रधान, पारिणामिक त्रय भेद महान।
लक्षण जीव का है उपयोग, द्वय वसु चार भेद के योग।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पारिमाणिक जीवलक्षण भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद जीव के दो कहलाए संसारी अरु मुक्त बताए।
संसारी त्रस थावर जान, संज्ञी असंज्ञी भेद प्रधान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जीव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू जल अग्नी वायू शुभकार, वनस्पति यह पञ्च प्रकार।
द्वय त्रय चउ पंचेन्द्रियवान, त्रस कहलाए जीव प्रधान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री त्रस स्थावर जीव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इन्द्रियाँ पाँच रही दो रूप, द्रव्य भाव दोनों स्वरूप।
द्रव्योपकरण निवृत्तीवान, लब्ध्योपयोग भावेन्द्रिय जान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रिय भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्पर्शन रसना अरु घ्राण, चक्षू कर्ण ये इन्द्रियाँ मान।
स्पर्श रस गंध वर्ण विशेष, विषय कहे इन्द्रिय के शेष।।10।।

ॐ ह्रीं श्री इन्द्रिय विषय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन का विषय रहा श्रुत ज्ञान, एकेन्द्रिय सब जीव समान।
भू जल अग्नि वायु पहिचान, वनस्पति एकेन्द्रिवान।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतमनिन्द्रिय विषय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लट पिपील अलि नर सुर जान, इक इक इन्द्री बढ़ती मान।
संज्ञी हो मन से संयुक्त, शेष सभी हों मन से युक्त।।12।।

ॐ ह्रीं श्री संज्ञी असंज्ञी भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म योग निग्रह गति पाय, अन्य गती में मर के जाय।
गमन होय श्रेणी अनुसार, जीव अरु पुद्गल का हर बार।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विग्रहगति अनुश्रेणी गति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्त जीव ऋजु गति से जाय, एक समय की गति कहलाय।
संसारी विग्रह गतिवान, चार समय के पहले मान।।14।।

ॐ ह्रीं श्री मुक्त जीव संसारी जीव गति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समय एक द्वय तीन प्रकार, रहे जीव ये निःआहार।
सम्मूर्छन अरु गर्भोपपाद, भेद जन्म के रखना याद।।15।।

ॐ ह्रीं श्री अनाहारक समय एवं जन्म भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सचित शीत संवृत्त विपरीत, मिश्र योनि नव भेद प्रतीत।
पोत जरायू अण्डज वान, गर्भ जन्म त्रय भेद प्रमाण।।16।।

ॐ ह्रीं श्री जन्म योनि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव नारकी का उपपाद, जन्म होय यह रखना याद।
शेष सम्मूर्छन्न पावें देह, जानो भाई निःसन्देह।।17।।

ॐ ह्रीं श्री जन्म शरीर भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

औदारिक वैक्रिय आहार, तेजस कार्माण पञ्च प्रकार।
आगे-आगे सूक्ष्म शरीर, आहारक तन जानो धीर।।18।।

ॐ ह्रीं श्री शरीर भेद सूक्ष्मता प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनन्त गुणे तेजस कार्माण, अप्रतिघाती रहे महान।
है सम्बन्ध अनादी काल, सर्व शरीरों से हर हाल॥19॥

ॐ ह्रीं श्री आहारक तैजस कार्माण शरीर सूक्ष्मता प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो शरीर द्वय त्रय या चार, एक साथ में भली प्रकार।
है उपभोग रहित कार्माण, अरू गर्भ सम्मूर्छन जान॥20॥

ॐ ह्रीं श्री तैजस कार्माण अनादि सम्बद्ध संसारी जीव शरीर संख्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औपपादिक वैक्रिय तन होय, लब्धी प्रत्यय तेजस सोय।
शुभ विशुद्ध आहारक देह, प्रमत्त संयत पाएँ तन ऐह॥21॥

ॐ ह्रीं श्री अंतिम तन उपभोग रहितत्व गर्भ सम्मूर्छन लब्धि जन्य शरीर प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारक सम्मूर्छन जो होय, जीव नपुंशक मानो सोय।
देव में नहीं नपुंशक भेद, शेष सभी त्रय पाते वेद॥22॥

ॐ ह्रीं श्री नपुंसक जीव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

औपपादिक चरमोत्तम देह, असंख्यात वर्षायुष सोय।
अनपवर्त आयुष यह जीव, पुण्यवान यह रहे अतीव॥23॥

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात आयु अनपवर्त्य आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

भाव जीव का लक्षण भेद, इन्द्रिय आदिक जीव प्रभेद।
कार्माणादिक देह सुजान, वेदादिक का पाया ज्ञान॥
श्री जिनेन्द्र कीन्हे व्याख्यान, गणधर गूंथे सम्यक्ज्ञान।
पाया आगम का आधार, पूज रहे हम बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वाद नयगर्भित द्वितीय अध्यायायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय अध्याय

(चामर छन्द)

रत्न शर्करा बालुका पंक जानिए,
धूम तम महातम भू पहिचानिए।
नाम अनुसार कांति शुभ गाइये,
अधो अधो सप्त भूमियाँ यह पाइये॥1॥

ॐ ह्रीं नरक भूमि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीस पच्चीस पन्द्रह दश गाए हैं,
तीन एक लाख पाँच कम बतलाए हैं।
साँतवे नरक में पाँच बिल जानिए,
लाख चौरासी सर्व पहिचानिए॥2॥

ॐ ह्रीं नरक भूमि संख्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नारकी नित्य अशुभतर देहवान हैं,
लेश्या वेदना विक्रिया परिणाम हैं।
दु:ख नारकी परस्पर देत घोर हैं,
तीसरे नरक तक ही चले जोर है॥3॥

ॐ ह्रीं नारकी दु:ख प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठायु एक तीन सात दश की गाई है,
सत्रह बाईस तैंतिस सागर बताई है।
नरकों में नारकी दुख पाते जानिए,
दीर्घ काल पावें दुख भाई ये मानिए॥4॥

ॐ ह्रीं नरकायु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप लवणोदादिक शुभ गाए हैं,
नाम श्रेष्ठ जिनके भाई बतलाए हैं।
जम्बूद्वीप से दूने-दूने जो गाए हैं,
पूर्व पूर्व के वलयाकृत घेरे जो पाए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं द्वीप समुद्र प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरत हेमवत क्षेत्र हरी विदेह जानिए,
रम्यक हैरण्यवत ऐरावत मानिए।

हिमवन महाहिमवन अरु निषधांचल सोहते,
नील रुक्मि शिखरिन् पर्वत मन मोहते॥6॥

ॐ ह्रीं भरतादि क्षेत्र हिमवन् आदि पर्वत प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीत श्वेत लाल नील श्वेत पीत गाए हैं,
पार्श्व भाग मणियों से खचित बतलाए हैं।
पद्म महापद्म द्रह तिगिन्छ पहिचानिए,
केसरी महापुण्डरीक पुण्डरीक मानिए॥7॥

ॐ ह्रीं पर्वत वर्ण, सरोवर कृम प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(सखी छन्द)

इक सहस योजन लम्बाई, जिसकी आधी चौड़ाई।
शुभ प्रथम सरोवर जानो, गहरा दश योजन मानो॥8॥

ॐ ह्रीं पद्मसरोवर विस्तार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इक योजन कमल बताया, जो पद्म द्रह में गाया।
यह दूने दूने जानो, द्रह और कमल पहिचानो॥9॥

ॐ ह्रीं कमल सरोवर क्रम प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धी, लक्ष्मी है धारी ऋद्धी।
सामानिक परिषद गाए, सुर पल्य की आयू पाए॥10॥

ॐ ह्रीं श्री ह्रीआदि देवि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गंगा रोहित हरि सीता, नारी स्वर्ण कुला रक्ता।
यह पूरब दिशा बहाएँ, प्रति क्षेत्र में दो-दो आएँ॥11॥

ॐ ह्रीं पूर्वदिक सरिता प्रवाह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पश्चिम में सिंधु रोहितास्या, हरिकान्त सीतोद नरकान्ता।
रूप्यकूल रक्तोदा जानो, निर्मल जल बहता मानो॥12॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिक् सरिता प्रवाह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं चौदह सहस सरिताएँ, मिल गंगा सिन्धू में आएँ।
यह दुगुनी दुगुनी जानो, उत्तर दक्षिण सम मानो॥13॥

ॐ ह्रीं सहायक नदी-संख्या-दिशा प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाँच सौ छब्बिस सही जानो, छह बटे उन्नीस पहिचानो।
योजन विस्तार बताया, शुभ भरत क्षेत्र का गाया॥14॥

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र विस्तार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब पर्वत क्षेत्र बताए, जो विदेह क्षेत्र तक गाए।
दुगुना-दुगुना विस्तारा, सम उत्तर दक्षिण सारा॥15॥

ॐ ह्रीं सहायक नदी प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरतैरावत क्षेत्र में गाए, हो वृद्धि ह्रास बतलाए।
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जानो, ना अन्य क्षेत्र हो मानो॥16॥

ॐ ह्रीं भरतैरावत क्षेत्र विस्तार काल प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेमवत हरिवर्ष कुरू द्वय, आयू इक द्वय पल्य त्रय।
नर पशु की उत्तम गाई, लघु अन्तर्मुहूर्त बताई॥17॥

ॐ ह्रीं पर्वत तथा क्षेत्र विस्तार एवं आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर वासी भी पावें, भोगों में समय बितावें।
आयू विदेह में जानो, संख्यात वर्ष की मानो॥18॥

ॐ ह्रीं आयु उत्तर कुरुआदि वर्णन प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इक सौ नब्बे वा गाया, शुभ क्षेत्र विभाग बताया।
शुभ द्वीप जम्बु से जानो, इस भरत क्षेत्र का मानो॥19॥

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र विस्तार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जम्बू से दोगुणा बताए, द्वय खण्ड धातकी गाए।
पुष्करार्ध द्वीप भी जानो, द्रह क्षेत्र सु पर्वत मानो॥20॥

ॐ ह्रीं धातकी पुष्करार्द्ध स्थित क्षेत्र पर्वत संख्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषोत्तर गिरि तक गाए, नर आर्य म्लेच्छ बतलाए।
हैं आर्य सभ्य शुभकारी, होते म्लेच्छ दुठ भारी॥21॥

ॐ ह्रीं मनुष्य क्षेत्र, भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भरतैरावत विदेह में भाई, है कर्म भूमि सुखदायी।
कुरु उत्तर देव बताए, जो भोग भूमि कहलाए।।22।।

ॐ ह्रीं श्री कर्मभूमि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

अधो लोक मध्य का गाया, वर्णन इसमें बतलाया।
हम पूजा करते भाई, श्रुत की मन से हर्षाई।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादनय गर्भित तृतीय-अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ अध्याय

(मोतियादाम)

बताए देव चार परकार, भवनत्रिक पाते लेश्या चार।
कृष्ण अरु नील कापोत सुपीत, कही यह काल अनादी रीत।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देवगति तथा लेश्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भेद देवों के दश अठ पाँच, रहे द्वादश कल्पों तक सांच।
भवनवासी व्यन्तर ज्योतीष, कल्पवासी, कहते जिन ईश।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देवगति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र सामानिक पालानीक, पारिषद आत्म रक्ष प्राकीर्ण।
त्रायश्त्रिंश किल्विश आभीयोग, भेद देवों के रहे मनोग।।3।।

ॐ ह्रीं श्री इन्द्र आदि भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

त्रायश्त्रिंश लोकपाल ना होय, देव व्यन्तर ज्योतिष में सोय।
भवनवासी व्यन्तर में देव, इन्द्र दो दो ही रहें सदैव।।4।।

ॐ ह्रीं श्री त्रायत्रिंश आदि भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

काय प्रवीचार स्वर्ग ईशान, शेष स्पर्श रूप वच वान।
रहा अच्युत तक मन प्रवीचार, शेष सब गाये अप्रवीचार।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देवगति सुख प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भवनवासी हैं असुर सुनाग, सुपर्ण विद्युत अग्नी सुवात।
स्तनित उदधि दीप दिक् जान, कहे दश आगम से पहिचान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री भवनवासी देव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव किन्नर किम्पुरुष गंधर्व, महोरग, यक्ष सु राक्षस सर्व।
भूत अरु रहे पिशाची देव, रहे व्यन्तर के भेद सदैव।।7।।

ॐ ह्रीं श्री व्यन्तर देव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य शशि ग्रह नक्षत्र प्रकीर्ण, रहे तारागण सदा विकीर्ण।
प्रदक्षिणा करते देव विमान, मेरु की मनुज लोक में जान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिषदेव भेद तथा गति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विभाजन होय काल का भ्रात, इसी कारण हो दिन या रात।
लोक मानव के बाहर देव, सभी स्थिर हो रहे सदैव।।9।।

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिष देव गति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कल्प अरु कल्पातीत सदैव, रहे वैमानिक वासी देव।
विमान ऊपर ऊपर सब जान, श्रेष्ठ देवों की यह पहिचान।।10।।

ॐ ह्रीं श्री वैमानिक देव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सौधर्म ईशान अरु सनत कुमार, माहेन्द्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर शुभकार।
लान्तव कापिष्ठ शुक्र पहिचान, महाशुक्र शतार सहस्त्रार मान।।
देव आनत प्राणत शुभकार, और आरणेन्द्र अच्युत मनहार।
ग्रैवेयक अरु अनुदिश नौ जान, अनुत्तर विजयादिक पञ्च महान।।11।।

ॐ ह्रीं श्री कल्प विमान भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्थिति प्रभाव सुख द्युति मनहार, लेश्या इन्द्रिय विषयाहार।
स्वर्ग में ऊपर वृद्धी पाँय, अवधि के विषय भी बढ़ते जाँय।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वैमानिक देवस्य विशेषता प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गती अरु शरीर परिग्रहवान, कहा देवों में जो अभिमान।
स्वर्ग में ऊपर ऊपर हीन, देव पाके रहते स्वाधीन।।13।।

ॐ ह्रीं श्री वैमानिक देवस्य हीनाधिकता प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री देवस्य हीनादिक प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

युगल दो तीन शेष में जान, लेश्या पीत पद्म सित मान।
रहे ग्रीवक के नीचे कल्प, शेष कहलाए सभी अकल्प॥14॥

ॐ ह्रीं श्री वैमानिक देवस्य लेश्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक सारस्वत आदित्य, वह्नि अरुण गर्दतोय तुषित्य।
बताए अव्याबाध अरिष्ट, देव लोकान्तिक वासी इष्ट॥15॥

ॐ ह्रीं श्री लोकान्तिक देवस्य भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय आदिक में भव दो धार, जीव हो जाते भव से पार।
छोड़कर सुर नर नारक पर्याय, जीव की तिर्यंच गती कहलाय॥16॥

ॐ ह्रीं श्री अन्य देव सम्बन्धी चरम शरीरादि प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु इक सागर असुर कुमार, नाग अरु सुपर्ण द्वीप ये चार।
पल्य त्रय अर्ध पल्य हो हीन, सभी की जानो ज्ञान प्रवीण॥17॥

ॐ ह्रीं श्री भवनवासी देवस्य आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु पावें सौधर्मैशान, श्रेष्ठ साधिक दो सागर जान।
सात सागर से ज्यादा इन्द्र, प्राप्त करते सानत माहेन्द्र॥18॥

ॐ ह्रीं श्री सौधर्म ईशान सानत कुमार महेन्द्र देव सम्बन्धी आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेष में सात जोड़कर तीन, सप्त नौ एकादश गिन लीन।
त्रयोदश और पञ्चदश जान, स्वर्ग सोलहवें तक पहिचान॥19॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मादि अष्ट युगल विमानस्थ देवायु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग सोलह से नव ग्रेवेक, बढ़ाए सागर फिर इक एक।
सर्व अनुदिश में हों बत्तीस, अनुत्तर सर्वार्थसिद्धि तैंतीस॥20॥

ॐ ह्रीं श्री ग्रैवेयक अच्युतादि अनुत्तर पर्यन्त देवायु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पल्य साधिक सोधर्मैशान, जघन्य पाते आयू पहिचान।
पूर्व युग की उत्कृष्ट महान, आगे की है जघन्य यह मान॥21॥

ॐ ह्रीं श्री देवस्य जघन्य आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नरक पहले से भावन वान, जघन्य आयू दश सहस की मान।
आयु उत्कृष्ट प्रथम में पाय, अग्र की वह जघन्य कहलाय॥22॥

ॐ ह्रीं श्री नरक तथा भवन व्यन्तर देवस्य आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव व्यन्तर ज्योतिष की उत्कृष्ट, पल्य इक साधिक गाई इष्ट।
जघन्य ज्योतिष की अष्टम भाग, रहा उत्कृष्ट का यही विभाग॥23॥

ॐ ह्रीं श्री व्यन्तर ज्योतिष देवस्य उत्कृष्ट आयु प्रतिपादक तत्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु लौकान्तिक की पहिचान, आठ सागर की रही महान।
नहीं इनमें हीनाधिक जान, कथन आगम का रहा प्रधान॥24॥

ॐ ह्रीं लौकान्तिक देव आयु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

दोहा– देवों का वर्णन किया, गया यहाँ पर जान।
इस चौथे अध्याय की, महिमा रही महान॥
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़ें, पाकर आगम ज्ञान।
यही भावना है 'विशद', पाएँ पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित चतुर्थ-अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम अध्याय

(रेखताछन्द)

अजीव काय धर्माधर्माकाश, और है पुद्गल द्रव्य विशेष।
जीव है चेतन द्रव्य महान, अजीब गाये हैं द्रव्य अशेष॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अजीव काय द्रव्य प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अरूपी द्रव्य अवस्थित नित्य, कहा है पुद्गल रूपी द्रव्य।
रहित हैं क्रिया से जो एकेक, आकाश तक के यह सारे द्रव्य॥2॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्य विशेषता प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीव इक धर्माधर्म विशेष, बताए इनके असंख्य प्रदेश।
अनन्त आकाश है पुदगल जान, त्रिविध जिसके अणु है अप्रदेश॥3॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्य प्रदेश संख्या प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहा है लोकाकाशवगाह, पूर्णतः धर्म अधर्म विशेष।
रहा है क्षीर में नीर समान, मिले आकाश में पूर्ण प्रदेश॥4॥

ॐ ह्रीं श्री प्रदेश तथा अणु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

एकादिक संख्यातीत अनन्त, रहा पुदगल का भी अवगाह।
जीव का असंख्यातादि प्रदेश, अवगाहन पूर्ण लोक में पाय॥5॥

ॐ ह्रीं श्री जीव पुद्गल द्रव्यस्य अवगाहन प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रदेशों में संहार विसर्प, सदा ही होय सुदीप समान।
रहा आगम का कथन विशेष, बताई द्रव्यों की पहिचान॥6॥

ॐ ह्रीं श्री जीव प्रदेश प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव पुद्गल का गति उपकार, कहा है धर्म द्रव्य का जान।
अधर्म का स्थिति रहा विशेष, आकाश का है अवकाश महान॥7॥

ॐ ह्रीं श्री धर्माधर्माकाश द्रव्यस्थ उपकार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन तन मन अरु श्वाशोच्छवास, द्रव्य पुद्गल का यह उपकार।
रहा सुख दुख जीवन अरु अंत, कहे ज्ञानी जग के अनगार॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पुद्गल द्रव्यस्योपकार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परस्पर जीव करें उपकार, काल का भी उपकार महान।
वर्तना अरु परिणाम क्रिया, परत्व अपरत्व यही पहिचान॥9॥

ॐ ह्रीं श्री जीव तथा काल द्रव्यस्य उपकार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श रस गंध वर्ण संयुक्त, द्रव्य पुद्गल भी रहा महान।
शब्द स्थूल सूक्ष्म संस्थान, भेदतम छाया आतपवान॥10॥

ॐ ह्रीं श्री पुद्गल लक्षण तथा पर्याय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्ध अरु होता है उद्योत, प्राप्त करता पुद्गल पर्याय।
अणू स्कन्ध रहे दो भेद, प्राप्त जिसमें पुद्गल कहलाय॥11॥

ॐ ह्रीं श्री पुद्गल द्रव्य अणु स्कन्ध भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद संघात से हो स्कंध, भेद से अणु का हो निर्माण।
भेद संघात से चाक्षुस होय, किया जिनवर ने ये व्याख्यान॥12॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्य सामन्य विशेष लक्षण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य का लक्षण है सत् रूप, ध्रोव्य व्यय हो उत्पाद संयुक्त।
ध्रोव्य का भाव बताया नित्य, वस्तु हो अर्पितानर्पित युक्त॥13॥

ॐ ह्रीं श्री अर्पितानर्पित तथा बन्ध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्ष स्निग्ध से होता बन्ध, जघन्य गुण सम भी रहा अबन्ध।
अधिक गुण परिणामे निज रूप, द्वयधिक गुण में होता है बन्ध॥14॥

ॐ ह्रीं श्री परमाणु बन्ध निषेध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्रव्य होता गुण पर्ययवान, काल का समय बतायानन्त।
रहे गुण द्रव्य का आश्रय पाय, भाव परिणाम कहे जिन संत॥15॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्य तथा काल द्रव्य प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

द्रव्य अजीव बताए जो, किया यहाँ व्याख्यान।
उनके गुण पर्याय का, लक्षण रहा महान॥

बन्धाबन्ध का भी किया, यहाँ कथन शुभकार।
ऐसे जिन श्रुत को विशद, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित पंचम-अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम अध्याय

(चाल छन्द)

मन बचन काय की जानो, हो क्रिया से आस्रव मानो।
पुण्यास्त्रव शुभ से गाया, अरु अशुभ से पाप बताया।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आश्रवलक्षण भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सांपराय कषाय के धारी, आस्त्रव पाते हैं भारी।
जो रहित कषाय बताए, वह ईर्यापथ ही पाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आश्रव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय कषाय व्रत गाये, पन चउ पन भेद गिनाए।
पच्चीस क्रियाएँ जानो, ये भेद उन्तालिस मानो।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सांपरायिक आश्रव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

तीव्र मंद अरु ज्ञाताज्ञात, भावाधिकरण रहा विख्यात।
वीर्य से आस्त्रव होय विशेष, जीवाजीव आधार अशेष।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आश्रव विशेष भेद तथा अधिकरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्रम्भ समारम्भारम्भ, कृत कारित अनुमत प्रारम्भ।
त्रय योग कषाय मिलाए, आस्त्रव शत अष्ट कहाए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री जीवाधिकरण भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

निक्षेप संयोगी, निसर्ग द्वि चउ द्वि त्रियोगी।
सब निर्वतना भेद सुग्यारह गाए, अजीवाधिकरण के पाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अजीवाधिकरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मात्सर्य प्रदोष आसादन, निह्नव अन्तराय स्व घातन।
यह दर्श ज्ञान के पाए, आस्रव के कारण गाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञान दर्शनावरण आश्रव हेतु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख शोक ताप आक्रन्दन, वध और कहा परिदेवन।
निज पर के हेतु उपाए, वेदनीय अशाता पाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री असाता वेदनीय कर्म आश्रव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रति भूत अनुकम्पा दानी, संयम सराग धर ज्ञानी।
क्षम शौच योग का धारी, शाता वेदी हो भारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सातावेदनीय कर्म आश्रव भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलि श्रुत धर्म बताया, गुरु संघ का निन्दक गाया।
दर्शन मोह चारित पाएँ, परिणाम कषाय जगाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनमोहनीय तथा चारित्रमोहनीय आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु संगारम्भ जो पाए, नरकायु बन्ध उपाए।
हो मायाचारी प्राणी, पशु गति बाँधें अज्ञानी।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नरक तथा तिर्यञ्च आयु आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरम्भ अल्प मृदु भावी, नर आयू बन्ध स्वभावी।
ना शील व्रतों को पाएँ, चारों गति में उपजाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं श्री मनुष्य आयु आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो रागी संयमी प्राणी, हों बाल तपी अज्ञानी।
सम्यक् दर्शन जो पाएँ, वह देवगती उपजाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं श्री देवायु आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो योग कुटिलताए पाएँ, अरु विसंवाद कर जाएँ।
वह अशुभ नाम के धारी, विपरीत नाम शुभकारी।।14।।

ॐ ह्रीं श्री शुभाशुभ कर्माश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो सोलह भावना भाए, वह तीर्थंकर पद पाए।
वे शिव पदवी को पाते, गुरु उमास्वामी यह गाते।।15।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकर नामकर्म प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पर निन्दा गुण आच्छादी, निज गुण के प्रशंसा वादी।
वे नीच गोत्र का भाई, आस्रव पावें दुखदायी।।16।।

ॐ ह्रीं श्री नीचगोत्र कर्म आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपरीत पूर्व के जानो, लघु वृत्ती वाले मानो।
वे उच्च गोत्र का भाई, आस्रव पावें सुखदायी।।17।।

ॐ ह्रीं श्री उच्चगोत्र कर्म आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कई विघ्न डालते प्राणी, दानादिक में अज्ञानी।
वे अन्तराय को पाएँ, कर्मास्रव नर प्रगटाएँ।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अन्तराय कर्म आश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

कर्मास्त्रव करते प्राणी, जग भटक रहे अज्ञानी।
जो श्रद्धा ज्ञान जगाएँ, वे प्राणी शिव पद पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित षष्ठम अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्योपूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम अध्याय

(पद्धरि छन्द)

हिंसा अनृत स्तेय जान, मैथुन परिग्रह भी रहा मान।
इनसे विरक्त व्रती कहाय, जो देश सर्व व्रत कहा जाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शुभाश्रव प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत में स्थिरता हेतु जान, हैं पाँच पाँच जग में महान।
भावनाएँ भाएँ भव्य जीव, वह पाएँ अतिशय पुण्य अतीव।।2।।

ॐ ह्रीं श्री व्रतस्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन वचन गुप्ति ईर्या महान, समीति आदान निक्षेप मान।
भोजन आलोकित पान सोय, इनसे हिंसा में कमी होय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अहिंसा व्रत स्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्रोध लोभ भीरुत्व खोय, अरु हास्य क्रिया से बचे सोय।
आगम अनुसारी वचन वान, हो सत्य व्रती जग में महान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सत्य व्रत स्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गृह शून्य विमोचित वास पाय, जहँ रुके किसी को ना भगाय।
हो विसंवाद बिन भैक्ष्य शुद्धि, ये अचौर्य व्रती की रही बुद्धि।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अचौर्यव्रत स्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तज क्रिया कथा अरु देह राग, रति अनुस्मरण रस पुष्ट त्याग।
श्रृंगार देह से जो विहीन, वह ब्रह्मचर्य व्रत रहे लीन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्यक्त स्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विषय बताए अमनोग, इन्द्रिय के या होवे मनोग।
इनका करते जो जीव त्याग, वे अपरिग्रही हैं पुण्य भाग।।7।।

ॐ ह्रीं श्री परिग्रह त्याग व्रत स्थिर भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पाँच पाप हिन्सादि जान, ये इह पर भव में दुखद मान।
इनसे अवद्य होवे अपाय, का दर्श जीव दुखकार पाय।।8।।

ॐ ह्रीं श्री हिंसादि त्यागस्य अन्य भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैत्री प्रमोद कारुण्य जान, माध्यस्थ भाव ये क्रमिक मान।
हो जीव गुणाधिक क्लिश्यमान, विपरीत बुद्धि धर से प्रधान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मैत्री आदि भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हो जगत काय का जो स्वभाव, जिससे विराग संवेग भाव।
होवे प्रमाद से जीव घात, हिंसा कहलाए यही भ्रात।।10।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग वैराग्य भावना प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है असद कथन अनृत सुजान, स्तेय अदत्तादान जान।
अब्रह्म भाव मैथुन कहाय, मूर्छा परिग्रह कहते जिनाय।।11।।

ॐ ह्रीं श्री अनृतस्तेय अब्रह्म परिग्रह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो शल्य रहित जो व्रती जान, अनगारागारी रहे मान।
पञ्चाणुव्रत धारी है अगार, अनगार सकल व्रत रहे धार।।12।।

ॐ ह्रीं श्री व्रती अणुव्रती महाव्रती परिभाषा प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग्देशानर्थ विरती महान, सामायिक प्रोषधोपवास मान।
भोगोपभोग का करता प्रमाण, व्रति रखे अतिथि का सदा ध्यान।।13।।

ॐ ह्रीं श्री अणुव्रतस्य सहायक व्रत प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मरण काल को निकट जान, लेवे सल्लेखना जो महान।
वह महाव्रतों का भाव पाय, तन परिजन में ना नेह लाय।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सल्लेखना अतिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शंका कांक्षा विचिकित्स पाय, अन्य दृष्टि प्रशंसा संस्तवाय।
व्रत शील के जानो अतीचार, पाँच-पाँच बताए जिनाचार।।15।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन, व्रत शीलातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहिंसाणुव्रत के अतीचार, बध बन्धन लादे अतीभार।
पीड़ा दे रोके खान पान, ये पाँच बताए हैं प्रधान।।16।।

ॐ ह्रीं श्री अहिंसा अणुव्रत अतिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्योपदेश रहोभ्याख्यान, क्रिया कूट लेख का करे काम।
साकार मंत्र न्यासापहार, सत्याणु व्रत के अतीचार।।17।।

ॐ ह्रीं श्री सत्य अणुव्रत अतिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तेन प्रयोग तदाहृतादान, हो हीनाधिक मानोनमान।
राजाज्ञा तज प्रतिरूपकार, हैं अचौर्याणुव्रत के अतीचार।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अचौर्य अणुव्रत पंचातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रीड़ा अनंग पर का विवाह, अरु काम की होवे तीव्र चाह।
चाहे ग्रहीत अग्रहीत नार, ब्रह्मचर्याणुव्रत के अतीचार।।19।।

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्याणुव्रतातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोना चांदी धन धान्य जान, अरु क्षेत्र वास्तु गाया प्रधान।
हो कुप्य दास दासी विचार, ये अपरिग्रह व्रत के अतीचार।।20।।

ॐ ह्रीं श्री अपरिग्रह अणुव्रतस्यातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिश ऊर्ध्व अधः या तिर्यग जान, ना व्रत सीमा का रखें ध्यान।
जो क्षेत्र वृद्धि करते अपार, दिग्व्रत के पाँच हैं अतीचार।।21।।

ॐ ह्रीं जश्री दिग्व्रतस्यातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आनयन होय रूपानुपात, सीमा के बाहर करें बात।
पुदगल क्षेपण प्रेषण विचार, ये देश व्रती के अतीचार।।22।।

ॐ ह्रीं श्री देशव्रतस्यातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कन्दर्प कौत्कुच्य हैं प्रधान, मौखर्य असमीक्षादिकरण जान।
भोगोपभोग का ना विचार, ये अनर्थ दण्ड के अतीचार।।23।।

ॐ ह्रीं श्री दण्ड व्रतस्यातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन वचन काय की दुष्प्रवृत्ति, आदर की जिनकी नाहि वृत्ति।
जो नित्य क्रिया में करें भूल, अतिचार सामायिक के रहे मूल।।24।।

ॐ ह्रीं श्री सामायिक व्रतस्यातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन देखे शोधे वस्तु जान, कर ग्रहण त्याग बिस्तर बिछान।
हो क्रिया अनादर और भूल, अतिचार प्रोषध के रहे मूल।।25।।

ॐ ह्रीं श्री प्रोषधोपवास व्रतातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषव सचित्त सम्बन्ध वान, आहार मिश्र दु:पक्व जान।
भोगोपभोग व्रत का प्रमाण, ये अतीचार हैं पाँच मान।।26।।

ॐ ह्रीं श्री उपभोग परिभोग परिमाणव्रत अतिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निक्षेप सचित्त अपिधान जान, कालातिक्रम मात्सर्य मान।
पर की वस्तू देवें दिलाय, अतिथि विभाग अतिचार पाय।।27।।

ॐ ह्रीं श्री अतिथि संविभाग व्रतातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन मृत्यू की चाहवान मित्रानुराग अरु हो निदान।
हो सुखानुबन्ध का भी विचार, सल्लेखना के हैं अतीचार।।28।।

ॐ ह्रीं श्री संल्लेखना व्रतातिचार प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो त्याग स्व-पर का होय दान, विधि द्रव्य आदि जैसा विधान।
जो दाता अरु पात्रानुसार, होवे विशेष जो कई प्रकार।।29।।

ॐ ह्रीं श्री दानलक्षण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

जो समीचीन श्रद्धान पाय, सम्यक् चारित में मन लगाय।
स्थिर होकर के करे ध्यान, वह प्राणी पाए विशद ज्ञान।।

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वाद नय गर्भित सप्तम अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम अध्याय

(पाइता छन्द)

नर मिथ्या योग कषाएँ, अविरति प्रमाद भी पाएँ।
हो बन्ध कषाय के द्वारा, पुद्गल आने पर सारा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री बन्ध कारण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चउ भेद बन्ध के गाए, प्रकृति प्रदेश बतलाए।
स्थिति अनुभाग भी जानो, हो योग कषाय से मानो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री बन्ध भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दर्शनावरण बताया, वेदनीय मोह आयू गाया।
नाम गोत्र अन्तराय जानो, भेद आदि बन्ध के मानो।।3।।

ॐ ह्रीं श्री प्रकृति बन्ध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच नव द्वय अट्ठाइस गाये, चउ ब्यालिस दो बतलाए।
द्वि पाँच भेद यह जानो, आठों कर्मों के मानो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री प्रकृति बन्धस्य उत्तर भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मति श्रुतावधी बतलाया, मन:पर्यय केवल गाया।
ये ज्ञानावरण कहाए, नौ दर्शनावरण बताए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञान दर्शनावरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन नींद के भेद बताए, अरु चक्षु अचक्षु भी गाए।
अवधि केवल दर्शन जानो, नों भेद पूर्ण ये मानो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनावरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

वेदनीय है साता असाता, मोह दर्श चारित्र कहाता।
तीन भेद दर्शन के गाए, पच्चिस चारित्र मोह कहाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वेदनीय मोहनीय कर्म बन्ध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर नारक पशु बतलाए, चार भेद आयू के गाए।
भेद तिरानवे नाम के जानो, जिससे रचित होय तन मानो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आयु नाम कर्म प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च नीच दो गोत्र कहाए, अन्तराय भोगोपभोग गाए।
दान लाभ अरु वीर्य बताए, पाँच भेद जिसके कहलाए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री गोत्र तथा अन्तराय भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणादिक त्रय जानो, अन्तराय भी साथ में मानो।
उत्कृष्ट स्थिति सागर गाई, कोड़ा कोड़ी तीस बताई।।10।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानदर्शनावरण भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मोह कर्म की सत्तर गाई, नाम गोत्र की बीस बताई।
आयु की तैंतिस सागर जानो, अब जघन्य आगे पहिचानो।।11।।

ॐ ह्रीं श्री मोह नाम गोत्र कर्म प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बारह मुहूर्त्त वेदनीय पाए, नाम गोत्र मुहूर्त्त अठ गाए।
आगे शेष कर्म की जानो, अन्तर्मुहूर्त्त बताई मानो।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वेदनीय गोत्र नाम कर्म प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय अनुभाग कहाए, यथा नाम गुण को जो पाए।
कर्म निर्जरा फिर हो जाए, दो प्रकार की जो कहलाए।।13।।

ॐ ह्रीं श्री अनुभाग बन्ध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नाम प्रत्यय योग विशेषात, एक क्षेत्रावगाह प्रदेशात।
अनन्त प्रदेशों में संबंध, यह प्रदेश कहलाए बंध।।14।।

ॐ ह्रीं श्री प्रकृति प्रदेश स्थिति बन्ध प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य रूप शुभ आयू नाम, उच्च गोत्र सद् वेद प्रधान।
पाप रूप सब कर्म अशेष, ऐसा गाए वीर जिनेश।।15।।

ॐ ह्रीं श्री पुण्य पाप प्रकृति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

बन्धोदय कर्मों के भेद, सभी बताए यहाँ प्रभेद।
करने को हम कर्म विनाश, पूज रहे हो ज्ञान प्रकाश।

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वादनय गर्भित अष्टम अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम अध्याय

(सुखमा छन्द)

संवर आस्त्रव रोध कहाय, छह प्रकार से होता जाय।
गुप्ति समिति परिषह जय जान, धर्मानुप्रेक्षा-चारित्रवान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री संवर तथा संवर हेतु प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जरा भी तप से नर पाए, योग रोध गुप्ती कहलाए।
ईर्या भाषा ऐषणादान, निक्षेपोत्सर्ग समिति पहिचान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री गुप्ति समिति प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षमा मार्दव आर्जव जान, शौच सत्य तप संयम मान।
त्यागाकिन्चन ब्रह्मचर्य जान, कहे धर्म के दश सोपान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री दसधर्म प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनित्याशरण संसार एकत्व, अन्य अशुचि आस्त्रव जग सत्व।
संवर निर्जरा दुर्लभ बोधि, धर्मानुप्रेक्षा द्वादश शोधि।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अनुप्रेक्षा प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा तृषादिक परिषह बीस, जीतें जिनको जैन ऋशीष।
निर्जरार्थ शिवमार्ग सुजान, हेतू परिषह सहें महान।।5।।

ॐ ह्रीं श्री परिषह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश से बारह गुण स्थान, चौदह परिषह कहे सुजान।
ग्यारह परिषह जिन के जान, साम्पराय वादर सब मान।।6।।
ॐ ह्रीं श्री गुणस्थान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो परिषह प्रज्ञा अज्ञान, ज्ञानावरणोदय से जान।
अलाभ अदर्शन परिषह पाय, उदय होय जब मोहान्तराय।।7।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानदर्शनावरणस्योदये परीषह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित मोह से परिषह सात, नाग्न्यारति याचना विख्यात।
याचनाक्रोष स्त्री पुरस्कार, प्राणी पाते बारम्बार।।8।।
ॐ ह्रीं श्री चरित्रमोहस्योदये परीषह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

और कहे जो परिषह शेष, वेदनीय से होंय अशेष।
एक आदि करके उन्नीस, परिषह युगपद पाएँ ऋशीष।।9।।
ॐ ह्रीं श्री वेदनीय कर्मस्योदये परीषह प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित सामायिक कहलाय, परिहार विशुद्धी सूक्ष्म कषाय।
छेदोपस्थापना है यथाख्यात, पञ्चागम में हैं विख्यात।।10।।
ॐ ह्रीं श्री चरित्र प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवमौदर्य वृत्ती संख्यान, काय क्लेश रस त्याग प्रधान।
विविक्त शैय्याशन अनशन जान, बाह्य सुतप छह रहे महान।।11।।
ॐ ह्रीं श्री बहिरंग तप प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अंतरंग तप प्रायश्चित् ध्यान, स्वाध्याय व्युत्सर्ग महान।
वैय्यावृत्ति अरु विनय कहाय, तप का धारी शिव पद पाय।।12।।
ॐ ह्रीं श्री अंतरंग तप प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रायश्चित् के नौ विनय के चार, वैय्यावृत्ति के दश शुभकार
स्वाध्याय के पाँच द्वय भेद, व्युत्सर्ग के हरते खेद।।13।।
ॐ ह्रीं श्री अंतरंगतपो-भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रतिक्रमण आलोचन जान, उभय विवेक व्युत्सर्ग महान।
परिहारोपस्थापना अरु तप छेद, प्रायश्चित के यह नौ भेद।।14।।
ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चारित्रोपचार, विनय बताया चार प्रकार।
मुनिवर पालें भली प्रकार, कर्म नाश पावें भव पार।।15।।
ॐ ह्रीं श्री विनय अन्तरंग तप प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्योपाध्याय शैक्ष्य अरु ग्लान, तपसी गण कुल संघ महान।
साधू मनोज्ञ कहे दश भेद, वैय्यावृत्ति कर हरते खेद।।16।।
ॐ ह्रीं श्री वैय्याव्रत प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाचना प्रच्छना धर्मोपदेश, अनुप्रेक्षा आम्नाय विशेष।
स्वाध्याय के भेद प्रधान, बाह्याभ्यन्तर परिग्रह जान।।17।।
ॐ ह्रीं श्री स्वाध्याय भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आर्त्त रौद्र धर्म शुक्ल ध्यान, अन्तर्मुहूर्त को होय महान।
परे मोक्ष के हेतु प्रधान, शुभ संघनन धर पाए मान।।18।।
ॐ ह्रीं श्री ध्यान तथा मोक्ष हेतु ध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमनोज्ञ वस्तू आ जाय, उसको चिन्ता सदा सताय।
यह अनिष्ट संयोगजध्यान, इष्ट वियोग विपरीत सुजान।।19।।
ॐ ह्रीं श्री अनिष्टसंयोग इष्ट वियोजक आर्त्तध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीड़ा चिंतन रहा जो ध्यान, जीव दुखी हों जिसमें जान।
त्याग का फल चाहे इन्सान, कहा गया वह ध्यान निदान।।20।।
ॐ ह्रीं श्री अजीवाधिकरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अविरत देशव्रती व्रतवान, साधू प्रमत्त संयत गुणवान।
इनके होता आर्त्त ध्यान, ना हो साधु को ध्यान निदान।।21।।
ॐ ह्रीं श्री ध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविरत देश व्रती के ध्यान, हिंसानृत स्तेय हो मान।
विषय संरक्षण भी वह पाय, रोद्र ध्यान धारी कहलाय॥22॥

ॐ ह्रीं श्री रौद्र ध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज्ञापाय विपाक संस्थान, विचय कहा ये धर्म ध्यान।
आदि के दो पूरब धर ध्यान, पाँए केवली अन्तिम जान॥23॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथक्त्व एकत्व वितर्क सुजान, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती मान।
व्युपरत क्रिया निवृत्ती ध्यान, शुक्ल ध्यान ये चार महान॥24॥

ॐ ह्रीं श्री शुक्ल ध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्रमशः तीन एक धर योग, काय योग फिर होय अयोग।
एकाश्रय सवितर्क वीचार, पूर्व द्वितिय होता अविचार॥25॥

ॐ ह्रीं श्री गुणस्थाने शुक्ल ध्यान प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो वितर्क वाला श्रुतज्ञान, वीचार होता अर्थ प्रधान।
व्यंजन योग की हो संक्रान्ति, मिटे जीव के मन की भ्रान्ति॥26॥

ॐ ह्रीं श्री ध्यान भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्दृष्टी श्रावक जान, विरतानन्त वियोजक मान।
क्षपकोशमकोपशांत विमोह, क्षपक क्षीण मोह अरु जिन होय॥27॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दृष्टि जीव निर्जरा प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्रमशः असंख्यात गुण जान, होय निर्जरा ऐसा मान।
रहा निर्जरा का क्रम भ्रात, जैनागम में है विख्यात॥28॥

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात गुण निर्जरा प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुलाक वकुश निर्ग्रन्थ कुशील, स्नातक है धारी शील।
मुक्ति वधु के बनते कंत, पांच भेद युत होते सन्त॥29॥

ॐ ह्रीं श्री मुनि भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयतश्रुत प्रति सेवनवान, तीर्थ लिंग लेश्या स्थान।
है उपपाद स्थान विकल्प, मुनियों का ये कथन है अल्प॥30॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिभेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

संवर सहित निर्जरा होय, तप से करते प्राणी सोय।
जिसका फल गाया निर्वाण, 'विशद' प्राप्त हम करें महान॥

ॐ ह्रीं श्री स्यादवादनय गर्भित नवम अध्याय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम अध्याय

(ताटंक छन्द)

मोह कर्म का क्षय होने से, ज्ञान दर्शानावरणान्तराय।
का क्षय हो जाने से प्राणी, केवल ज्ञान स्वयं प्रगटाय॥1॥

ॐ ह्रीं श्री घाति कर्म क्षय प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बन्ध के हेतू का क्षय होते, जीव निर्जरा करें महान।
सर्व कर्म का क्षय होते ही, मोक्ष प्राप्त होता निर्वाण॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्ष स्वरूप प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

औपशमिक आदिक भावों का, अरु भव्यत्व भाव को नाश।
केवल सम्यक्त्व ज्ञान सुदर्शन, सिद्धत्व भाव का होय प्रकाश॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भावकर्म मोक्ष प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म के क्षय से ऊर्ध्व गमन कर, जावे जीव लोक के अन्त।
है अभाव धर्मास्तिकाय का, ऐसा कहते ज्ञानी संत॥4॥

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वगमन स्वभावस्वरूप प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व प्रयोग के द्वारा हो अरु, बन्ध का भी हो जाए क्षय।
बन्ध छेद हो जाने पर वह, उर्ध्व स्वभाव पाए अक्षय॥5॥

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्व गमन प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चक्र घूमता ज्यों कुम्हार का, लेपहीन तुम्बी वत् जान।
हो एरण्ड बीज शिख अग्नी, सम दृष्टांत जीव के मान॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मुक्त जीव स्वभावोदाहरण प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्र काल गति लिंग तीर्थ शुभ, प्रत्येक बोधित बुद्ध चरित्र।
ज्ञानावगहनान्तर संख्या है, अल्पबहुत्व का भेद पवित्र॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध भेद प्रतिपादक तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य)

कर्म घातियाँ का क्षय होते, प्राणी पाते केवल ज्ञान।
सर्व कर्म क्षयते हो मुक्ती, प्राप्त करें हम पद निर्वाण॥
मोक्ष शास्त्र की पूजा करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँगे।
मोक्ष मार्ग पर बढ़कर हम भी, सिद्ध शिला पर जाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्री स्यादवाद नय गर्भित दशम अध्यायस्थ तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य–ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत सर्व तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा–निज में निज के रमण का, जागा मन में भाव।
गाते हैं जयमालिका, पाने निज स्वभाव॥

(शम्भू छंद)

काल अनादी से सब प्राणी, इस जग में भटकाए हैं।
मोह महामद को पीने से, कभी सम्हल न पाए हैं॥
धर्म प्रवर्तन करने वाले, तीर्थंकर होते चौबीस।
इन्द्र और नागेन्द्र भाव से, चरणों में झुकते शत् ईश॥
गणधर के द्वारा जिनवर की, वाणी झेली जाती है।
हेयाहेय का ज्ञान जगत् के, जीवों को बतलाती है॥
अनुक्रम से जिनवाणी को फिर, आचार्यों ने पाया है।
रत्नत्रय से भेद ज्ञान को, अपने हृदय जगाया है॥
जिनवाणी से निज का अनुभव, आचार्यों ने पाया है।
मोक्ष मार्ग यह मोक्ष प्रदायक, जीवों को दर्शाया है॥
जैनाचार्य उमास्वामी ने, मंगलमय यह कार्य किया।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र यह, मंगलमय निर्माण किया॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, मोक्षमार्ग का हो निर्माण।
इस पर चलने वाला प्राणी, निश्चय पाएगा निर्वाण॥
रत्नत्रय की ध्वजा पताका, हमको अब फहराना है।

ज्ञान शक्ति से मुक्ती पथ पर, हमको बढ़ते जाना है॥
लोकजयी सर्वोत्तम ध्वज है, महिमा अपरंपार कही।
तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ है, अतिशय मंगलकार रही॥
सप्त तत्त्व अरु छह द्रव्यों का, जिसमें सुन्दर कथन किया।
अनेकांत अरु स्याद्वाद के, द्वारा जिसका मथन किया॥
जीवाजीव द्रव्य का लक्षण, बतलाया है सविस्तार।
उनके भेद प्रभेदों का भी, वर्णन किया है मंगलकार॥
सप्त तत्त्व की व्याख्या जिसमें, बतलाई है भली प्रकार।
वर्णन किया गया है पावन, जिनवर वाणी के अनुसार॥
हेय तत्त्व को हेय बताया, उपादेय को कहा महान्।
जिसके द्वारा पा लेते हैं, जग के प्राणी सम्यक्ज्ञान॥
ज्ञानानंद स्वभावी होकर, करता राग-द्वेष को दूर।
सदाचरण को पाने वाला, शुभ भावों से हो भरपूर॥
स्वर्ण कीच में रहकर के ज्यों, होता नहीं है उससे लिप्त।
त्यों ज्ञानी जन जग में रहकर, पूर्ण रूप से रहें अलिप्त॥
रागभाव का हो अभाव तो, होता नहीं कर्म का बंध।
मोहनीय का नाश होय तो, प्राणी होता पूर्ण अबन्ध॥
फल पाऊँ तत्त्वार्थ सूत्र को, पढ़ने का मैं हे भगवन्!
सदाचार के द्वारा मेरा, छूट जाए भव का बंधन॥
'विशद' ज्ञान को प्राप्त करूँ मैं, अष्ट कर्म का होय विनाश।
यह संसार असार छोड़कर, पा जाऊँ मैं मुक्ती वास॥

(छंद-घत्तानंद)

पढ़के जिनवाणी, हो श्रद्धानी, बन जाएँ सम्यक् ज्ञानी।
हो आतम ध्यानी, केवलज्ञानी, तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ के प्राणी॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर विधान तत्त्वार्थ सूत्र का, मन में जागे हर्ष अपार।
शुभ भावों का फल पाता वह, सर्व जगत् में मंगलकार॥
कर देता अज्ञान दूर वह, बन जाता सम्यक्ज्ञानी।
मोक्षमार्ग का राही बनता, सत्य यही आगम वाणी॥
इस विधान की पूजा का फल, हमें प्राप्त हो हे भगवन्।
रत्नत्रय निधि शुभम् प्राप्त हो, विशदभाव से मम् वंदन॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

आरती तत्त्वार्थ सूत्र की

(तर्ज–आज करें हम...)

आज करे तत्त्वार्थ सूत्र की, आरति सब नर-नार
घृत के दीपक लेकर आए-2, जिनवर के दरबार।
ओ जिनवर! हम सब उतारे मंगल आरती॥

तीर्थंकर की दिव्य देशना, ॐकार मय प्यारी।
गणधर द्वारा गुँथित की है, जग में मंगलकारी॥
ओ जिनवर.....॥

आचार्यों ने क्रमशः जिसका, मौखिक वर्णन कीन्हा।
पुष्पदंत अरु भूतबलि ने, लिपिबद्ध कर दीन्हा॥
ओ जिनवर.....॥

उमास्वामी आचार्य ने अनुपम, रचना कीन्ही भाई।
शुभ तत्त्वार्थ सूत्र यह मनहर, कृति सामने आई॥
ओ जिनवर.....॥

सप्त तत्त्व छह द्रव्यों का, शुभ वर्णन जिसमें कीन्हा।
दश अध्याय के द्वारा अतिशय, मोक्षमार्ग शुभ दीन्हा॥
ओ जिनवर.....॥

वह उपवास के फल को पाते, भाव सहित जो ध्यावें।
'विशद' भाव से पाठ करें अरु, आरती मंगल गावें॥
ओ जिनवर.....॥

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य- खण्डे भारतदेशे हरियाणा प्रान्ते श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, रानीला मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2540 वि.सं. 2070 चैत्र मासे कृष्ण पक्षे अष्टमी दिन सोमवासरे तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

(स्थापना)

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते हैं उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े॥
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ती में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वा.

दोहा– **गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।**
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आस्था दीदी

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. चारित्र शुद्धि विधान
115. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
116. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
117. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
118. दिव्यध्वनि विधान
119. षट्खण्डागम विधान
120. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ती संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिंदगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ती के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. शुभषितरत्नावली
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग–3
139. नैतिक शिक्षा भाग–1, 2, 3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग–1
143. चिंतवन सरोवर भाग–2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग–1
148. मूक उपदेश भाग–2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ती पीयूष
153. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
154. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट : उपरोक्त 120 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्याभव करें। –मुनि विशालसागर